The International Sociologist Journal ISSN:2320-4575 2020

उज्जैनी में बौद्ध भिक्षुणियों पर – एक विष्लेषणात्मक अध्ययन

शोधार्थी हरि ओम सिंह
स्कूल ऑफ सोषल साइंस देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, इंदौर

सारांश

उज्जैन बुद्ध काल से बारहवीं शताब्दी तक किस प्रकार से बौद्धधर्म का केन्द्र बना रहा। हम देखते हैं कि उज्जैन की जनता ने धर्म कार्यो में बहुत धन व्यय किया था और बौद्ध धर्म के प्रचार के निमित्त महान त्याग किया था। साँची के स्तूपों एवं विहारों के निर्माण में सबसे अधिक योगदान उज्जैन की जनता का ही प्राप्त हुआ था। साँची में जिन दायकों के नाम उत्कीर्ण मिले है, उनमें उज्जैन के 36, विदिषा के 18, माहिष्मती के 4 और कुररघर के 26 है। उज्जैन के दायकों ने जब साँची में इतनी अधिक संख्या में दान किया था, तो उन्होंने उज्जैन में धार्मिक कार्य न किय हो, यह संभव नहीं है। सम्प्रति उज्जैन के पास की वेष्या टेकरी नामक स्तूप, मकोड़िया स्टेषन के बाँयी ओर से नष्टवषेष, महाकाल मंदिर के पास के खंड़ित स्तूप, योगेष्वर–टेकरी की प्राचीन ईंटे, भर्तृहरि तथा प्राप्त मूर्तियाँ उन्हीं दानवीरों के स्मृति चिन्ह है।

प्राचीन उज्जैन नगर के नष्टावषेष आधुनिक नगर के पास ही क्षिप्रा नदी के दायें किनारे भर्तृहरि–गुहा से लेकर गढ़कालिका के आसपास चारों ओर तक प्राप्त हुए है। उज्जैन की खुदाई में मिली मुद्राओं में से अनेक पर बोधिवृक्ष बने हुए है। उन पर '**उज्जेनीय**' लिखा हुआ भी मिला है। प्राचीन नगर का आरम्भिक तल काफी गहराई पर मिला है। पानी के विषाल मटके तथा अनेक भाण्ड प्राप्त हो चुके है।

भर्तृहरि गुहा तथा वेष्या टेकरी के स्तूपों की ओर विषेष रूप से ध्यान आकर्षित करना चाहते है। भर्तृहरि–गुहा प्राचीन बौद्ध विहार है। इसके भीतर खम्बों पर जो मूर्तियाँ बनी हैं, वे व्रजयान गर्भित महायान से संबंधित है। पुरूष–स्त्री की प्रतिमाएँ भुवनेष्वर जैसी है। गुहा के भीतर बोधिसत्व की एक सुन्दर मूर्ति है। अन्य मूर्तियाँ भी रही होंगी, जो गुहा में रहने वाले श्रमणों द्वारा हटा दी गयी होंगी। वेष्या टेकरी के स्तूपों का निर्माण और उनकी प्राचीन ईटों को देखकर ऐसा जान पड़ता है कि बुद्ध परिनिर्वाण के बाद इनका निर्माण हुआ था और कांचनवन विहार भी यही रहा होगा। उज्जैन नगर के मध्य स्थित योगेष्वर टेकरी किसी प्राचीन स्तूप या विहार का ही नष्टवषेष जान पड़ती है।

शब्द कुंजी बौद्ध भिक्षुणियां एवं उनके द्वारा निर्मित चिन्ह

प्रस्तावना..बुद्ध काल में उज्जैन अवन्ति दक्षिणापथ का सर्वश्रेष्ठ समृद्धषाली नगर था। अवन्ति जनपद की राजधानी भी यही नगर था। उस समय इसका नाम उज्जयिनी थी। चण्डप्रद्योत नामक राजा यहाँ राज्य करता था। उसी के समय में बौद्ध धर्म उज्जैन में पहुँचा और बारहवी शताब्दी के अंत तक बौद्ध–परम्परा वहाँ विद्यमान रही। अवन्ति जनपद का प्रमुख नगर होने के कारण, उज्जैन को अवन्तिपुर भी कहा जाता था। अवन्ति जनपद का नाम पीछे मालवा हो गया था। यह नाम पंजाब की ओर से मालवगणों में आने से पड़ा था। दक्षिणापथ के नगरों में विदिषा, गोनर्द, उज्जयिनी (उज्जैन) और महिष्मति बहुत प्रसिद्ध थे। तेल प्रणाली तथा कुररघर बड़े कस्बे थे। इन सबमें क्षिप्रा तट पर अवस्थित, उज्जयिनी एक महत्वपूर्ण नगर था।

उज्जैन के राजा चण्डप्रद्योत ने अपने पुरोहित–पुत्र महाकात्यायन को सात व्यक्तियों के साथ भगवान बुद्ध को उज्जैन लाने के लिये भेजा था। ये आठ व्यक्ति तथागत के पास जाकर भिक्षु हो गये थे। जब महाकात्यायन ने उज्जैन की श्रीसम्पनता का वर्णन करते हुए तथागत से उज्जैन आने की प्रार्थना की थी, तब तथागत ने उन्हें ही अपने साथियों के साथ बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ उज्जैन भेजा था। महाकात्यायन तेलप्रणाली नगर से होकर उज्जैन पहुँचे थे। इसी तेलप्रणाली निगम की श्रेष्ठि कन्या ने अपने सिर के सुन्दर केषों को काट और बेचकर उसकी आय से इन आठ भिक्षुओं को भोजन दान किया था। इस घटना को सुन, महाराज

चण्डप्रद्योत ने उस श्रेष्ठि कन्या को अपनी पटरानी बनाया था, जिससे गोपालकुमार नामक राजकुमार का जन्म हुआ था, जो चण्डप्रद्योत के बाद उज्जैन के राज–सिंहासन पर बैठा था। पुत्र के नाम पर ही रानी का नाम भी गोपालमाता देवी पड़ गया था। इस देवी के गर्भ से वासुलदत्ता (संस्कृत नाम वासदत्ता) नामक राजकुमारी उत्पन्न हुई थी, जिसे चण्डप्रद्योत का कैदी कौषाम्बी नरेष उदयन भागा ले गया था और अपनी पटरानी बनाया था, जो श्यामावती और मागन्दिय की मृत्यु के पष्चात् उदयन की परमप्रिय महिषी थी। वह बचपन से भी भगवान बुद्ध की भक्त थी।

गोपालमाता की महाकात्यायन स्थविर पर बड़ी श्रद्धा थी। उसने उनके लिये राजकीय उद्यान कांचनवन में एक सुंदर बौद्ध विहार का निर्माण करवाया था और भिक्षुं संघ को दान किया था। महाकात्यायन स्थविर पर उज्जैन नगरवासियों की भी श्रद्धा बढ़ती ही गयी और शीघ्र ही उज्जैन काषाय वस्त्र से प्रकाषित हो उठा।

महाकात्यायन स्थविर ने मथुरा से लेकर उज्जैन तक घूम–घूम कर बौद्व धर्म का प्रचार किया था। कुछ दिनों तक कुररघर के पर्वतीय प्रताप वाले विहार में भी वास किया था। किंतु अधिक समय उन्होंने उज्जैन के कांचनवन विहार में ही व्यतीत किया था। अवन्ती के वेलकुण्ड नगर से प्रवजित कुमारपुत्र, वेणुग्राम के ऋषिदत्त (इसिदत्त) तथा कुररघर के सोणकुटिकण्ण महाकात्यायन के प्रसिद्ध भिक्षु षिष्य थे। प्रसिद्ध गणिका प्रज्ञावती, जो पीछे भिक्षुणी होकर अभयमाता नाम से प्रसिद्ध हो गयी थी, उज्जैन की ही रहने वाली थी। उसके पुत्र अभय भी उस समय के एक प्रसिद्ध भिक्षु थे। भिक्षुणी अभया भी उज्जैन नगर की ही थी। उज्जैन की ऋषिदासी जीवनमुक्ता परम साधिका भिक्षुणी थी, जिसकी 48 गाथाएँ आज भी थेरीगाथा में विद्यमान है, जिन्हें पढ़कर धर्म–संवेग एवं कर्म–सिद्वान्त का दार्षनिक ज्ञान होता था। कात्यायनी और काली उपासिकाएँ अवन्ती जनपद की ही बुद्धकालीन विभूतियाँ थी, जिनके नाम बौद्ध जगत में बड़ी श्रद्धा से लिये जाते है।

भगवान बुद्ध ने महाकात्यायन को श्रेष्ठकृत्व (एतदग्र) की उपाधि दी थी और सोणकुटिकण्ण को सुवक्ता (कल्याणावाक्करण) होने के लिये। इसी प्रकार कुररधर के सोणकुटिकण्ण भिक्षु की माता भिक्षुणी कात्यायनी को अतीव श्रद्धालु होने के लिये तथा काली उपासिका को अनुश्रव श्रद्धालु होने के लिये।

विनयपिटक के चर्मस्कन्धक (5, 3, 1) में आया है कि महाकात्यायन स्थविर ने तीन वर्ष के भीतर अवन्ती में बड़ी कठिनाई से दस भिक्षुओं को एकत्र किया था। उनके सामने कुछ सांघिक नियमों की कड़ाई बाधक थी। तब उन्होंने सोणकुटिकण्ण को तथागत के पास यह कहकर भेजा था–सोण, जाओ, भगवान् के चरणों में वन्दना करना और कहना भन्ते अवन्ती दक्षिणा–पथ में बहुत कम भिक्षु हैं। तीन वर्ष व्यतीत कर बड़ी कठिनाई से दस भिक्षु एकत्रित कर मुझे उपसम्पदा मिली।(1) अच्छा हो, भगवान् अवन्ति दक्षिणा–पथ में (थोड़े भिक्षुओं के संघ से उपसम्पदा की अनुज्ञा दें। (2) अवन्ति दक्षिणा–पथ में, भन्ते, भूमि काली, कड़ी गोखुरू (गोकंटकों) से भरी है। अच्छा हो, भगवान अवन्ति दक्षिणा–पथ में भिक्षु संघ को उपानह पहनने की अनुज्ञा दें। (3) अवन्ति दक्षिणा–पथ में भन्ते, मनुष्य स्नान के प्रेमी, उदक से शुद्धि मानने वाले हैं। अच्छा हो, भन्ते अवन्ति दक्षिणा–पथ में नित्य स्नान की अनुज्ञा दें। (4) अवन्ति दक्षिणा–पथ में, भन्ते चर्ममय आस्तरण (बिछौने) होते हैं, जैसे मेष–चर्म, अजा–चर्म, मृग–चर्म। कृपया, भन्ते, चर्ममय आस्तरण की अनुज्ञा दें। (5) और भन्ते, अवन्ती दक्षिणा पथ के भिक्षुओं को दूसरे भिक्षुओं को देने के लिये मिले चीवरों को रखने की अनुज्ञा दें।

सोणकुटिकण्ण द्वारा महाकात्यायन की प्रार्थना सुनकर भगवान बुद्ध ने उप सम्पदा के लिये प्रत्यन्त जनपदों में दस के स्थान पर पाँच भिक्षुओं की अनुमति दे दी थी और शेष सभी बातों को स्वीकार कर लिया था।भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण (ई. पूर्व 543) के पष्चात् जब अस्थियों का विभाजन हो गया था, तब उज्जैन नरेष को वहाँ के बौद्धों के लिये तथागत की आसनी तथा अस्तरण प्राप्त हुए थे। (निसीदनं अवन्तिपुरे रट्ठे अत्थरणं तदा–बुद्धबंसो 28) इनको निधान कर उज्जैन में एक विषाल स्तूप का निर्माण उसी वर्ष हुआ था।

विभिन्न शताब्दीयों में बौद्ध भिक्षुयों के द्वारा किये गये निर्माण कार्य

अशोक के समय (ई.पू. 272) में उज्जैन में बौद्ध धर्म का बहुत विकास हुआ था। अषोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा का जन्म उज्जैन में ही हुआ था, जिन्होंने लंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किया था। अषोक की विदिषा कुमारी देवी नामक रानी द्वारा साँची में निर्मित विहारों एवं स्तूपों को देखकर तथा अषोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ किये हुए प्रयत्नों से भी उज्जैन में बौद्ध धर्म के स्वरूप का अनुमान लगाया जा सकता है।

दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में उज्जैन का भिक्षु–संघ बड़ा विषाल था, जिसके संघनायक संघरक्षित स्थविर थे, जो बहुत से भिक्षुओं के साथ ई.पूर्व 135 में लंका की राजधानी अनुपराधापुर में सुवर्णपाली चैत्य में अस्थियों के स्थापन–समारोह में सम्मिलित होने उज्जैन से वहाँ गये थे। कनिष्ठ काल में भी उज्जैन में बौद्ध धर्म की अच्छी अवस्था थी। उज्जैन के बौद्ध राजा महाक्षत्रप रूद्रसिहं तथा रूद्रसेन चष्टन की मुद्राएँ वैषाली (बिहार) की खुदाई में प्राप्त हुई, जिनका राज्य काल ईसा की तीसरी शताब्दी का प्रारंभिक भाग था।

चौथी शताब्दी के प्रारंभ में उज्जैन नरेष ने अपने पुत्र दन्तकुमार का विवाह कलिंग के राजा गुहषीव की पुत्री हेममाला के साथ किया था। ये दोनों बौद्ध धर्मावलम्बी थे। दन्तकुमार और हेममाला ने ही ई. सन् 312 में जगन्नाथपुरी के मंदिर में सुरक्षित भगवान बुद्ध की दन्त धातु (दाठ धातु) को लंका पहुँचाया था, जो सम्प्रति केंडी के प्रसिद्ध दलदा विहार में है। लंकावासियों को उज्जैन की यह महादेन है कि उज्जयिनी सन्तान महेन्द्र और संघमित्रा ने वहाँ बौद्ध धर्म पहुँचाया था और दन्तकुमार ने तथागत का पूजनीय दाँत।

छठी शताब्दी के आरंभ में उज्जैन के राजकुमार उपषून्य ने भिक्षु–दीक्षा ले ली थी और धर्म प्रचारार्थ उत्तर–पष्चिम के रास्ते से चीन गये थे। उन्होंने पूर्वी देही की राजधानी (538–40) ये : में रहकर तीन बौद्ध–ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था, फिर वे नानकिंग चले गये थे और ग्रन्थों के अनुसार कार्य में लगे रहे। इस प्रकार हम छठी शताब्दी के प्रारंभ तक उज्जैन के राजवंष में भी बौद्ध धर्म विद्यमान पाते है, किंतु चीनी यात्री हुएन्सांग (629–645) जब उज्जैन पहुंचा तो उसने देखा कि वहाँ 50 बौद्ध विहार थे, जो प्रायः उजाड़ थे। दो चार ही ऐसे थे जिनकी अवस्था कुछ अच्छी थी। लगभग 300 भिक्षु उज्जैन में उसे समय रहते थे। राजा ब्राह्मण था। वह बौद्ध धर्मावलम्बी नहीं था। नगर से थोड़ी दूर पर एक स्तूप था।

आठवीं शताब्दी में उज्जैन पर वज्रयान की सिद्ध परम्परा का प्रभाव पड़ गया था। दसवीं शताब्दी के तेरहवें सिद्ध तन्तिपा उज्जैन में ही रहने वाले थे। इनका जन्म कोरी वंष में हुआ था। ये जालन्धरपाद के षिष्य थे। तिब्बती तन जूर की पोथियों में चतुर्योग भावना नामक ग्रंथ इन्हीं का है। इन्होंने सिद्ध कह्नपा से भी उपदेष ग्रहण किया था। तन्तिपा के पीछे सिद्ध विचारों से प्रभावित राजा भृर्तहरि हुए, जो उज्जैन के प्रसिद्ध एवं विद्वान नरेष थे। तिब्बत के सोलहवीं शताब्दी के महाविद्वान् लामा कुन्गा निंपो (जन्म 1573) ने भृर्तहरि के सम्बध में लिखते हुए कहा हैं कि वे सिद्ध जालन्धरपाद के षिष्य थे। जालन्धरपाद का वर्णन करते हुए लामा ने लिखा है : मालवा देष में भर्तृहरि नामक राजा था। उसके पास 18000 अष्व थे और वह एक विस्तृत प्रदेष पर शासन करता था। उसके एक सहस्त्र स्त्रियाँ थी। आचार्य जालन्धरपाद समय को उपयुक्त जानकर उसे नगर से बाहर ले गये और अदभुत चमत्कार दिखलाये। तब राजा ने षिष्यत्व की प्रार्थना की। उन्होंने उत्तर दिया–तुम अपना राज्य त्यागो और अवधूत (धुतांग) ग्रहण करो। तत्पष्चात् में तुम्हें षिक्षा दूँगा। राजा ने सब कुछ त्याग दिया, वह आचार्य के पास गया और उपदेष ग्रहण किया। वह शीघ्र ही योगेष्वर हो गया। अंत में वह 500 व्यक्तियों के साथ स्वर्ग चला गया।

जलान्धरपाद को ही आदिनाथ भी कहा जाता है। यहीं गौरखनाथ के गुरू थे और गोरखनाथ मत्स्येन्द्रनाथ के। इस प्रकार नाथ परम्परा के अनुसार आज भी सिद्ध बौद्धों की परम्परा विद्यमान है। उज्जैन में भर्तृहरि–गुहा तथा योगेष्वर टेकरी को देखते हुए सिद्ध भर्तृहरि तथा बौद्ध परम्परा का स्मरण हो आता है। सिद्धों से संबंधित होने के ही कारण सम्प्रति बहुत से तिब्बती ग्रन्थों में उज्जैन का बौद्ध तीर्थ के रूप में वर्णन किया गया है।

शोध के उद्देष्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देष्य उज्जैन क्षेत्र में बौद्ध भिक्षुणियां के द्वारा किये जा रहे विकासात्मक एवं सुधारात्मक कार्यो को संकलित कर इन कार्यो के आधार पर अध्ययन एवं उसके विकास का एतिहासिक अध्ययन करना तथा वर्तमान में जिस प्रकार से उज्जैन क्षेत्र में बौद्ध भिक्षुणियों के द्वारा साहित्यिक साक्ष्यों से नये–नये प्रतिमान स्थापित हो रहे हैं ऐसे में शोधार्थी का प्रयास होगा कि उज्जैन क्षेत्र में स्थित बौद्ध भिक्षुणियों के किये जा रहे सुधारात्मक एवं विकासात्मक कार्य स्थल और उनसे प्रभावित नवीन स्थापत्य से भी लोगों को अवगत कराना।

अध्ययन क्षेत्र

शोध पत्र के अध्ययन के लिए उज्जैन क्षेत्र में निवास करने वाले बौद्ध भिक्षुणियों के द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार के स्तूप एवं चिन्हों को अध्ययन पत्र के लिए शामिल किया गया है।

आंकड़ो का संकलन और शोध विधि

उज्जैन क्षेत्र में स्थित बौद्ध भिक्षुणियों और उनके द्वारा किये जा रहे कार्यो को आधार मानकर अध्ययन के लिए आँकड़ो को दो माध्यम से संकलित किया गया है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण के माध्यम से अवलोकन किया गया है। द्वितियक स्त्रोत के अंतर्गत प्रकाषित स्त्रोत का अध्ययन किया गया है तथा बौद्धित्व कला से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं एवं इंटरनेट आदि के माध्यम से आँकड़ों को प्राप्त किया गया है और इनको वर्णनात्मक विधि के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह दृष्टिगत होता है कि उज्जैन क्षेत्र में स्थित स्मारक एवं स्थल नारी भिक्षुणीं धर्म के विरासत को धारण किये हुए है। जिससे उनकी तत्कालीन सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियों, वेषभूषा और अनेक ललित कलाओं की जानकारी मिलती है। जो तत्कालिन उज्जैन क्षेत्र के स्थल एवं स्मारक के क्रमिक विकास को निरूपित करने में सहायक है। उज्जैन क्षेत्र में बौद्ध भिक्षुणी महिलाओं के द्वारा किये गये योगदान को इतिहास के पन्नों पर कम महत्व दिया गया है। मेरे द्वारा इस लघु शोध के माध्यम से बौद्ध भिक्षुर्णीयों के द्वारा किये गये कार्यो को उजागर किया गया है, जो कि बौद्ध धर्म के विकास को निरूपित करता है। इसी तरह से उज्जैन क्षेत्र में बौद्ध भिक्षुणी महिलाओं के द्वारा काफी लम्बे समय से इस धर्म को आगे बढ़ाने में उनके द्वारा एक सफल प्रयास किया गया, जिससे आभाष होता है कि उज्जैन क्षेत्र में भिक्षुर्णी धर्म काफी मजबूत स्थिति में रहा है। जो आज के वर्तमान समय में भी इंगित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

अहिरवार, र. (२००४). उजैन और उसका गौरवशाली अतीत. जयपुरः आर० बि०.पृष्ट संख्या १०३

अहिरवार, श. व. (२०१३). पूर्वी मालवा का सांस्कृतिक इतिहास. दिल्ली.

अहिवार, र. (२००८). उजैनी की बौद्ध नारियां. उजैन.

आंबेडकर, भ. (२००७). भगवान बुद्ध और उनका धम्म. (ड. कौशल्यायन, ज्तंदे.) दिल्लीः सम्यक प्रकाशन. पृष्ट संख्या 20

कानूनगो , श. (१९७२). उज्जैनी का सांस्कृतिक इतिहास पृष्ट संख्या . इंदौरः प्रेम प्रकाशन. पृष्ट संख्या ५९, ६०,६२ १७१,१७२

कीर्ति, व. (२०६६). थेरी गाथा . दिल्लीः सम्यक प्रकाशन.पृष्ट संख्या ७३

दास, ड. (१९६६). महावस्तु अवदान. (ड. दास, ज्तंदे.) पटनाः बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्.

दूबे, स. (१९६६). बुद्ध युगीन भारत. दिल्लीः प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली. पृष्ट संख्य ९१,९२

पांडेय, ड. च. (१९७६). बौद्ध धर्म के विकाश का इतिहास. लखनऊ, उत्तर प्रदेशः हिंदी समिति सूचना विभाग.पृष्ट सख्या ५०

वाकडकर, ड., – आर्य, ड. क. (द.क.). मालविका... मालवा एक सर्वेक्षण. उज्जैन. पृष्ट संख्या ११६,११७

संकृत्यायन, र. (१९५८). पुरातत्व निबंधावली . इलाहबादः किताब महल इलाहबाद. पृष्ट संख्या ११४

सिंह, ड., – सिंह, ड. (२०११). भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल. दिल्लीः हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली. पृष्ट संख्या 10